जुलाई–दिसंबर, 2025

वर्ष : 26 संयुक्तांक : 3-4

हिन्दी जगत

विश्व हिन्दी न्यास का त्रैमासिक प्रकाशन

विश्व हिन्दी न्यास
WORLD HINDI FOUNDATION, INC.

A Tax-Exempt Charitable & Educational Foundation (ID 31-1679275)

Website : www.worldhindifoundation.org

Board of Directors

Executive Director

Dr. Anchala Sobrin

20 Presidential Way, Hopewell Junction, NY 12533

Tel: (845) 226 2542 । Email: hindinyas@gmail.com

Secretary

Mrs. Padmini Prasad

1282 Royal Pointe Lane, Ormond Beach, FL 32174

Tel: (845) 764 1058 । Email: prasad.padmini@gmail.com

Treasurer

Mr. Pradeep Agarwal

25, Oak Tavern Circle, Branchburg NJ 08876

Tel: (646) 472 6320 । Email: pnagarwal@gmail.com

Directors

Dr. Surendra Nath Pandey, GA (706) 610 1601

pandeysn@yahoo.com

Mrs. Seema Khurana, NY (845) 227 8605

seemakhurana1223@gmail.com

Mrs. Sharmishtha Dutta Banerjee NY (845) 764 9014

sduttabanerjee@gmail.com

Mr. Anil Agarwal, NY (718) 271 3129

manishi.anil@gmail.com

Prof. Suresh Rituparna, India (+91) 09810453245

rituparna.suresh@gmail.com

Dr. Shyam Narayan Shukla, CA (510)770-1218

shuklas@comcast.net

Dr. Ila Prasad, TX (832) 446-3677

ila_prasad1@yahoo.com

Chapter Directors

Buffalo: Mrs. Meena Rustgi (716) 632 5768

rustgime@roadrunner.com

California: Mrs. Nirmala Shukla (510) 770 1218

nirmalashukla@comcast.net

Chicago: Mr. Kamal Gupta (847) 612 4244

citkam@gmail.com

New Jersey: Mr. Sharad Agarwal (732) 283 0566

sharad@sntravel.net

New York: Mr. Man Mohan Maheshwari (212) 678 9011

m_wari@yahoo.com

Web Master

Mr. Saugata Banerjee

Email : ronbans@gmail.com

Editor Hindi Jagat & International Co-ordinator

Prof. Suresh Rituparna

221 Prabhavi Apartments, Plot No. 29B,

Sector 10, Dwarka, New Delhi 110075

Tel: 91 11 4558 4374, Mob.: 91 98104 53245

Email: rituparna.suresh@gmail.com

विश्व हिन्दी न्यास की परिकल्पना (Vision)

1. एक ऐसा विश्व जहाँ हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक-भाषा के रूप में विकसित हो।
2. एक ऐसी कार्य साधक भाषा बनाने का प्रयास जिसका प्रयोग सरकारी एवं निजी संस्थानों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हो सके।

विश्व हिन्दी न्यास का उद्देश्य (Mission)

1. हिन्दी भाषा के प्रति वैश्विक जागृति लाने का प्रयास
2. ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में इसके प्रयोग का विस्तार
3. हिन्दी भाषी समुदायों के बीच संस्कृति जन्य ज्ञान पर आधारित मूल्य बोध एवं शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार

विश्व हिन्दी न्यास का लक्ष्य (Goals)

1. न्यास का प्रयास रहेगा कि वह ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं को अपना समर्थन और प्रोत्साहन दे जो हिन्दी भाषा के शिक्षण एवं प्रयोग के क्षेत्र में जागृति फैलाने के कार्य से जुड़ी हुई हैं।
2. दक्षिण एशियाई विद्वानों, लेखकों, कलाकारों एवं विशेषज्ञों के सहयोग से विशिष्ट परियोजनाओं का सूत्रपात करना।
3. एक ऐसे अन्तर्जालिक आभासी मंच का निर्माण करना जिस पर 'ऑनलाइन सेटिंग' के माध्यम से भारतीय सामुदायिक केन्द्रों एवं शिक्षण संस्थाओं तक हिन्दी-शिक्षण-कार्यक्रमों को पहुँचाया जा सके।

न्यास की सदस्यता

विश्व हिन्दी न्यास के उद्देश्य और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें अनेक सक्रिय सदस्यों की आवश्यकता है। हमारा प्रयास है कि जो भी व्यक्ति न्यास के उद्देश्य, लक्ष्य एवं प्रेरक कार्यों में रूचि रखता है, न्यास का सदस्य बनने के लिए उसका हम सहर्ष स्वागत करते हैं। न्यास का सदस्य बनने के लिए तीन श्रेणियां हैं--

1. आजीवन सदस्य (सदस्यता राशि - $400 मात्र)
2. वार्षिक पारवारिक सदस्य (सदस्यता राशि - $ 40 मात्र)
3. व्यक्ति सदस्य (सदस्यता राशि - $25 मात्र)
4. छात्र सदस्य (सदस्यता राशि - $ 10 मात्र)

अनुदानदाता सदस्यों के लिए पांच श्रेणियां हैं:-

1. हिन्दी रत्न - $20,000 अथवा इससे अधिक
2. हिन्दी संरक्षक - $10,000 अथवा इससे अधिक
3. हिन्दी हितकारी - $5,000 अथवा इससे अधिक
4. हिन्दी मित्र - $3,500 अथवा इससे अधिक
5. हिन्दी शुभचिन्तक - $2500 अथवा इससे अधिक

आप किसी भी श्रेणी का चुनाव कर सकते हैं और अनुदान का चैक कोषाध्यक्ष (Treasurer) श्री प्रदीप अग्रवाल को निम्न- लिखित पते पर भेजने की कृपा करें।

25, Oak Tavern Circle, Branchburg, NJ 08876 USA
Tel: (646) 472-6320 Email: pnagarwal@gmail.com

न्यास की वेबसाइट पर जाकर सदस्यता फॉर्म

हिन्दी जगत

ISSN 1543-8651 (USA)

जुलाई-दिसम्बर 2025 ● वर्ष : 26 संयुक्तांक : 3-4

सम्पादक मंडल

प्रबंध सम्पादक
डॉ. अंचला सोब्रिन
àßmail : hindinyas@gmail.com, Tel : +1(845) 226-2542

सम्पादक
प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण
àßmail: rituparna.suresh@gmail.com, Tel : 91-9810453245

●

सह-सम्पादक
इला प्रसाद
àßmail : ila_prasad1@yahoo.com, Tel : +1(832) 446-3677

निवेदन : कृपया प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएँ सम्पादक मंडल के पास भेजें। पत्रिका में व्यक्त विचार स्वतन्त्र रूप से लेखकों के हैं, न्यास का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा प्रकाशित रचनाओं के लिए हम किसी प्रकार का मानदेय देने में असमर्थ हैं। इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों के प्रति हम अत्यन्त आभारी हैं।

विश्व हिन्दी न्यास,
World Hindi Foundation
20 Presidential Way Hopewell Junction,
New York, 12533
के लिए
डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय-संयोजक द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

आपके पत्रों से		2
सम्पादकीय		3
चार कविताएँ	—पंकज सुबीर	4
कवि होना भाग्य है, नीरज होना सौभाग्य	—प्रदीप सरदाना	5
नीरज के गीत	—नीरज	7
दूरदर्शन की 'बुनियाद' का 'युग', 66 साल के सफर में 'हमलोग' कहां आ गए?	—संजीव श्रीवास्तव	8
गांधी : विश्व में जीवित एक ज्योति	—अर्चना पैन्यूली	10
हम ज़िंदा हैं (कहानी)	—डॉ. शैलजा सक्सेना	12
दिल बहलाव	—बालकृष्ण भट्ट	16
दो कविताएँ	—रचना श्रीवास्तव	16
प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता	—डॉ. आरती स्मित	17
बच्चों का सवाल	—जसवीर त्यागी	20
'व्हाटसएप' और 'फेसबुक' की जय	—डॉ. संजय कुमार	21
गर्मियों में गाँव जाने का रोमांच	—बुद्धिनाथ मिश्र	22
टूटा तारा (कहानी)	—डॉ. ऋतु शर्मा	23
तूफ़ान का गुजर जाना अच्छा होता है (कहानी)	—सुषमा मुनीन्द्र	24
शिकायत	—सौम्या दुआ	27
बरता हुआ पुल (कविता)	—राजेन्द्र उपाध्याय	27
गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा (संस्मरण)	—विजया सती	28
धैर्य (लघुकथा)	—प्रिया देवांगन 'प्रियू'	30
पीले-पत्ते (कहानी)	—इंतज़ार हुसैन हिन्दी रूपांतर —खुर्शीद आलम	31
गपशप (कविता)	—वीना विभोर	35
मुहावरों से अनोखा न्याय (नाटिका)	—स्नेहलता दीक्षित	36
मुन्नू (कहानी)	—शीला राय शर्मा	38
दो ग़ज़लें	—अनुराग मिश्र ''ग़ैर	40
अनकहे को कहने का माध्यम : कहानी	—डॉ. तारा दूगड़	41
झरने बेकरार हैं (कविता)	—दीपक वोहरा	42
आओ विकास करें (व्यंग्य)	—पूरन सरमा	43
आओ, गजानन आओ (व्यंग्य)	—रामस्वरूप दीक्षित	44
घुमक्कडी दुशाले की अभिलाषा	—सुषमा व्यास राजनिधि	45
विचारों की तरंगे (कहानी)	—शीला मिश्रा	46
तीन कविताएँ	—मंजु मिश्रा	47
कुछ ग़ज़लें	—मुख़्तार अहमद	48

आवरण : ऋचा राव

आपके पत्रों से

हिन्दी जगत पत्रिका का अप्रैल-जून 2025 का अंक भेजने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। इसमें सम्मिलित प्रेरक कविताएँ, व्यंग्य 'ज़हर के सौदागर' तथा अन्य साहित्यिक रचनाएँ पढ़कर अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई और कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी मिलीं।

विशेष रूप से 'माँ का बैंक अकाउंट' कहानी ने माँ के त्याग, विश्वास और पारिवारिक संस्कारों को अत्यंत सरल किंतु भावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है, भाषा सरल है और भावनाएँ गहरी हैं। कहानी पाठक को सोचने और भावनात्मक रूप से जुड़ने पर मजबूर करती है।

कहानी 'संस्कार' आधुनिक जीवनशैली और पारंपरिक मूल्यों के बीच के संघर्ष को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती है। विदेश में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति, परिवार और बच्चों के संस्कारों को बनाए रखने की चिंता कहानी का मूख्य भाव है। भाषा सरल, प्रभावपूर्ण और विचारोत्तेजक है। यह रचना पाठक को आत्ममंथन करने और अपने संस्कारों के महत्व को समझने की प्रेरणा देती है।

आशा है कि हिंदी जगत भविष्य में भी इसी प्रकार मूल्यपरक, संवेदनशील और प्रेरणादायी साहित्य से पाठकों को समृद्ध करता रहेगा।

—**अनुभव भारद्वाज**
नवीन शाहदरा

'हिन्दी जगत' पत्रिका को हमें प्रेषित करने के लिए हृदय से धन्यवाद। यह पत्रिका न केवल भाषा की सुंदरता से परिचित कराती है, बल्कि मूल्यवान विचारों, प्रेरणादायक कविताओं और संवेदनशील लेखों के माध्यम से पाठकों के ज्ञान को भी विस्तृत करती है। आपके द्वारा भेजा गया यह अंक मेरे लिए एक प्रेरणादायी उपहार है, जो मुझे बेहतर लिखने-समझने के लिए उत्साहित करता है। कृपया मेरा सादर आभार स्वीकार करें और भविष्य में भी ऐसे ही साहित्यिक अंकों से मार्गदर्शन देते रहें। धन्यवाद।

—**जूली श्रीवास्तव**
पूर्वी चम्पारण (बिहार)

पत्रिका में प्रकाशित लेख 'पश्चिम से पुनः पूर्व की ओर' (शकुंतला बहादुर) न केवल विचारोत्तेजक है, बल्कि भारतीय संस्कृति, योग और भाषा के महत्व को गहराई से रेखांकित करता है। लेख यह स्पष्ट संदेश देता है कि योग, ध्यान और भारतीय दर्शन की वैश्विक स्वीकृति के बाद अब समय आ गया है कि भारत स्वयं अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पुनः पहचाने और अपनाएँ। साथ ही, भारतीय भाषाओं विशेषकर हिन्दी के प्रति आत्मगौरव और सम्मान का भाव जागृत करता है।

ऐसी जागरूकता बढ़ाने वाले और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत करने वाले लेखकों के लिए हिंदी जगत का योगदान अत्यंत सराहनीय है। यह पत्रिका हिंदी भाषा, भारतीय मूल्यों और बौद्धिक विमर्श को निरंतर समृद्ध कर रही है।

एक बार पुनः इस प्रेरणादायी सामग्री के लिए हिंदी जगत को हार्दिक धन्यवाद।

आशा है कि भविष्य में भी ऐसे उत्कृट लेख पाठकों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

सादर, धन्यवाद।

—**शाकिर अली**
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

'हिन्दी जगत' पत्रिका मेरे परिवार के लिए साहित्यिक सुरुचि भरी सामग्री का उपहार लेकर आता है। आपके चयन एवं सम्पादन के लिए साधुवाद और पत्रिका की निरन्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ

—**प्रो. श्यामसुन्दर पाण्डेय**
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

हिन्दी जगत (अप्रैल-जून 2025) का सुंदर अंक भेजने के लिए हृदय से धन्यवाद। वास्तव में विविधता से भरे लेख, कविताएँ और यात्रावृत्तांत इस पत्रिका को और पत्रिकाओं से भिन्न बनाते है।

डॉ. ऋतु शर्मा की कविता 'ज़िंदगी', ज्योति कृष्ण वर्मा की पाँच कविताएँ, ललित मंगोत्रा की 'मन का माली' तथा धर्मपाल महेंद्र जैन का सशक्त व्यंग्य 'ज़हर के सौदागर' पढ़कर मन सचमुच समृद्ध हो गया। ऐसी सारगर्भित और संवेदनशील रचनाएं एक ही अंक में पढ़ने का अवसर देने के लिए आपका तहे दिल से आभार। आवरण व अंतिम दोनों पृष्ठों को अच्छे चित्रों की कला से सजाया गया है। कृपया भविष्य में भी अपने श्रेष्ठ साहित्य से यूँ ही मार्गदर्शन करते रहें। धन्यवाद।

—**कशिश शर्मा**
गीता कॉलोनी, दिल्ली

हिंदी जगत जनवरी -मार्च, 2025 का अंक प्राप्त हुआ। हमेशा की तरह सर्वप्रथम संपादकीय पर नजर गई इसमें सूचना प्रौद्योगिकी को लेकर चिंतन मनन हुआ है साथ ही साहित्यिक परिदृश्य में जो बदलाव हो रहा है उसके ऊपर भी विचार किया गया है। कविताएं सभी अच्छी लगी, छोटी किंतु सारगर्भित हैं। 'भारत की विदेश नीति और हिंदी' तथा 'गांधी का हिंदी चिंतन' जैसे गंभीर आलेख काफी ज्ञानवर्धक थे। जैसा की इस पत्रिका में महान कलाकारों के जीवन और उनके कृतियों की झांकी दिखाई देती है, इस अंक में भी के. एल.सहगल और राजा रवि वर्मा के बारे में विस्तार से जानने को मिला।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

—**डॉ उर्मिला सिंह**
के . ई. एस. श्रॉफ कॉलेज, मुंबई

सम्पादकीय

यह वर्ष हिन्दी के कई महान साहित्यकारों का शताब्दी वर्ष रहा है। इनमें सबसे विशिष्ट नाम है डॉ. रामदरश मिश्र जी का, जिन्होंने अपने जीवन के 101 वर्ष सम्पूर्ण ऊर्जा, उत्साह और गरिमा के साथ पूरे करके 31 अक्टूबर, 2025 को वैकुण्ठधाम को प्रस्थान किया। डॉ. विद्यानिवास मिश्र एवं श्री गोपालदास 'नीरज' ऐसे दो अन्य प्रमुख नाम हैं जिनका शताब्दी वर्ष कई स्तरों पर देशभर में उनकी स्मृति को नमन करके मनाया गया।

श्री नीरज जी के कई स्मृति-बिम्ब मेरे मन में हैं। 1958 के आसपास जब मेरी उम्र लगभग 9 वर्ष की रही होगी, मैंने मथुरा के किशोरी रमण डिग्री कॉलेज के एक कवि-सम्मेलन में पहली बार सुना था। नीरज जी ने लोक-धुन पर आधारित एक गीत झूमते हुए सुनाया था—''ओ मेरे भैया पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे,'' जिसकी स्मृति मुझे अभी तक है। इसके कुछ ही वर्षों के बाद मैंने किसी पत्रिका में उनकी एक कविता पढ़ी—''शीघ्र करो मेरे जाने की तैयारी, रथ मेरा बाहर तैयार खड़ा'' मैं ये शब्द स्मृति के आधार पर लिख रहा हूँ, कुछ इधर-उधर भी हो सकते हैं, लेकिन भाव कुछ ऐसा ही था।

उन दिनों कवि सम्मेलनों के मंच पर नीरज की उपस्थिति अनिवार्य-स्थिति थी। मंच संचालक उन्हें 'गीतों का राजकुमार' कहकर सम्बोधित किया करते थे।

उनसे पहले मंच के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि बच्चन जी थे, नीरज के समकालीन कवियों में गोपाल सिंह नेपाली, शिशुपाल सिंह निर्धन, बलवीर सिंह रंग, रामावतार त्यागी प्रभृति और कवि हुए हैं लेकिन भाव, विषय, शिल्प और जीवन दर्शन का जो विस्तार और गहराई नीरज के काव्य में मिलती हैं वह अन्यत्र दुर्लभ ही थी।

नीरज ने जीवन भर अपने गीतों में प्रेम की पावनता और जीवन की नश्वरता को पूरे माधुर्य और सहज दार्शनिकता के साथ गाया है। लेकिन उनकी यह नश्वरता, जीवन के प्रति रागमय आशावादिता का मार्ग ही प्रशस्त करती चलती है—

हर दिवस, शाम ढल जाता है
हर तिमिर धूप में जल जाता है
मेरे मन! इस तरह न हिम्मत हार
वक्त कैसा भी हो, बदल जाता है।

वे बड़े विश्वास और दृढ़ता से कहते हैं—

छिप छिप अश्रु बहाने वालो,
मोती व्यर्थ लुटाने वालो,
कुछ सपनों के मर जाने से
जीवन नहीं मरा करता है।

नीरज के गीतों की सरलता और सहजता ने उन्हें फिल्मी दुनिया के नामचीन निर्देशकों एवं संगीतकारों का भी चहेता बना दिया था। सामान्यत: फिल्मी गीतों का निर्माण संगीतकारों द्वारा बनाई गई धुनों को शब्द देने की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ होता है। लेकिन नीरज के फिल्मी-गीतों का सफर इससे उलटा शुरू हुआ था। सन् 1963 में निर्देशक आर. चन्द्रा उनके गीतों को लेकर एक फिल्म बनाना चाहते थे। फिल्म का नाम भी नीरज ने ही सुझाया था—'नई उमर की नई फ़सल'! नीरज ने आर. चन्द्रा से कहा कि मैं बम्बई आकर गीत नहीं लिख पाऊँगा, लेकिन तुम अपनी पसन्द के गीत चुन लो और उनको संगीतबद्ध करा लो। इस तरह नीरज के कुछ प्रसिद्ध गीत संगीतकार रोशन की धुनों में तैयार किए गए और वे इतिहास बन गए। 'कारवाँ गुजर गया', 'देखती ही रहो न दर्पण तुम' जैसे गीत फिल्म रिलीज होने से पहले ही अत्यन्त प्रसिद्ध हो गए जबकि आर. चन्द्रा की फिल्म सफल नहीं हो सकी।

उनकी इस सफलता के कारण देवानंद और राजकपूर जैसे फिल्मकारों ने उन्हें अपनी फिल्मों के गीत लिखने के लिए आमंत्रित किया। वे लगभग पाँच वर्षों तक मुम्बई में रहकर विभिन्न फिल्मकारों के लिए गीत लिखते रहे और वे गीत आज तक बड़े चाव से सुने जाते हैं। इन गीतों में 'लिखे जो खत तुझे', 'रंगीला रे', 'फूलों के रंग से', दिल आज शायर है', 'शोखियों में घोला जाए', 'जीवन की बगिया महकेगी' जैसे गीत आज भी सदाबहार गीतों की श्रेणी में आते हैं।

नीरज के गीतों में उनके अपने समय के संघर्षशील समाज की व्यथाओं और आकांक्षाओं की, उनके सपनों की, उनकी पीड़ाओं की प्रतिध्वनियाँ भी सुनाई पड़ती हैं।

नीरज का समय प्रगतिवादी-प्रयोगवादी, एवं नई कविता का समय था—तथाकथित प्रगतिवादी आलोचकों ने उनकी कविताओं को समुचित महत्त्व नहीं दिया। उन्हें मंचीय कवि कहकर खारिज किया जाता रहा। शैलेन्द्र को तो वे अपना मानते थे लेकिन नीरज की कविता में समाए प्रगतिशील तत्त्वों की ओर उनकी निगाह नहीं जाती थी।

वस्तुत: नीरज के गीतों में मानव मात्र के प्रति असीम प्रेम विद्यमान है। उन्होंने व्यक्ति प्रेम के साथ ही साथ प्रकृति एवं सम्पूर्ण मानवता के दु:ख-दर्द को रेखांकित करने वाले विद्रोही भाव के गीत भी गाए है। समाज और राष्ट्र को जागरण की प्रेरणा देनेवाले गीत भी सुनाए हैं। राजनीति की विसंगतियों को उजागर करनेवाले गीतों के साथ ही साथ दार्शनिक भाववाले गीतों का सृजन भी किया है। उनके इस शताब्दी वर्ष में उनकी स्मृति को नमन।

वर्ष 2025 अपने अवसान की ओर है और 2026 के आने की आहटें हर ओर सुनाई देने लगी हैं। इसी के साथ विश्व हिन्दी न्यास भी अपनी स्थापना के 26 वर्ष पूरे करके 27वें में प्रवेश कर गया है। एक लम्बा और उत्साह भरा सफर रहा यह। 'हिन्दी जगत' के पाठकों तथा लेखक बन्धुओं की सकारात्मक भूमिका ने हमारे आत्म विश्वास की कभी डिगने नहीं दिया। आगे आने वाले सालों में भी उनका ऐसा ही अनुरागमय प्रोत्साहन हमें मिलता रहेगा, ऐसी कामना करते हैं। इसी के साथ हम अपने सभी पाठक-मित्रों को नव-वर्ष के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ भी प्रेषित करते है।

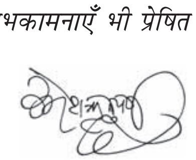

चार कविताएँ

❑ पंकज सुबीर

तुम अकेले हो दुनिया में

समझाया जा रहा है कि
आत्मकेन्द्रित बनो,
केवल और केवल
अपने ही बारे में सोचो,
यह मान कर चलो कि
तुम अकेले ही हो दुनिया में,
उसी प्रकार जिओ...,
भूल जाओ कि तुम्हारे पुरखे
न केवल सोचते थे...
परवाह करते थे...
दुनिया के हर इंसान की
बल्कि सोचते थे
पशु-पक्षियों,
पेड़-पर्वतों के भी बारे में,
उनकी चिन्ता का दायरा
बहुत व्यापक था,

तुम्हारे और तुम्हारे पुरखों के बीच
एक बड़ा कालखण्ड बीत चुका है,
जो उस समय सही था
वह इस समय नहीं हो सकता,
बदलते समय के साथ
बदलना होता है इंसान को
सो तुमको भी बदलना होगा,
जंगलों से लेकर इंसानों तक
कट रहे हैं वे तो कटने दो
नदियों से लेकर मानवता तक
सूख रहे हैं तो सूखने दो,
तुम्हें इस बारे में कुछ
भी नहीं सोचना है,
जंगलों के कटने और
नदियों के सूखने का परिणाम
अभी नहीं कुछ सदियों बाद दिखेगा,
तब तक तुम मर-खप चुके होगे,
इसीलिए
उसके बारे में मत सोचो
जीते रहो केवल और केवल
अपने लिए...।

केवल अपने लिए देखकर बोलना

देखना
और देखकर बोलना,
सुनना
और सुनकर बोलना,
बहुत अंतर होता है
इन दोनों प्रक्रियाओं में,
दोनों को बोलना
नहीं कहा जा सकता,
यदि आप सब कुछ
देख रहे हैं
और देखने के बाद भी
बोल नहीं रहे हैं
तो इसका मतलब है
आप दृष्टिहीन हैं,
यदि आप सुनकर
बोल रहे हैं
तो उस बोलने का
कोई अर्थ नहीं है,
वास्तव में तो आप गूँगे हैं।

चुप

सबसे अधिक समय तक
चुप रहने वाले लोग
हो रहे हैं सम्मानित,

यह एक अनूठी प्रतियोगिता है—
जहाँ बस रहना होता है
चुप्पी साध कर
अधिक से अधिक समय तक,

सिद्ध करना होता है
कि होते हुए भी नहीं है—
मुँह में जुबान,
गूँगापन सबसे
सुविधाजनक स्थिति है
सत्ता और जनता के बीच की,
यह दोनों के लिए मुफ़ीद होती है,
सबसे असुविधाजनक
होते हैं—शब्द।

विश्वास

अबकी बार
जब गाँव से चला
तो मेड़ पर लगे आम के पेड़ ने
अपनी मंजरियों वाली
सुगंधित छाँव में रोक लिया,

बोला— बेटा!
जब तुम पहले-पहल शहर गए थे
तो हफ़्ते भर में आ जाते थे,
फिर तुम महीने भर में लौटने लगे
और अब साल भर में आए हो,

हो सकता है
अगली बार तुम्हें आने में
एक जन्म लग जाए,
पर विश्वास रखो
मैं तब तक भी प्रतीक्षा करूँगा
और तुम्हें पहचान भी लूँगा,
क्योंकि, मेरी एक-एक शाख़ जानती है
उस स्पर्श को
जो तुम्हारे बचपन में
तुम्हारी देह से
मेरी छाल को मिला था,

तुम्हारी संतानें शायद अब
इस गाँव में न लौटें,
पर मुझे विश्वास है
तुम अगले जन्म में
यहाँ अवश्य लौटोगे। ❑

subeerin@gmail.com
मो. 9977855399

नीरज जन्म-शताब्दी के अवसर पर विशेष आलेख

कवि होना भाग्य है, नीरज होना सौभाग्य

▫ प्रदीप सरदाना

देश ने एक से एक शानदार कवि और एक से एक बेहतरीन गीतकार दिये हैं। लेकिन कवि और गीतकार के रूप में नीरज ने जो कर दिखाया वह बेमिसाल है। कवि के रूप में जिसने भी नीरज को एक बार मंच पर सुन लिया वह उनका हो गया। नीरज विश्व के अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने 70 बरस तक मंच पर राज किया। उधर फिल्मों के लिए लिखे उनके गीतों की बात करें तो उनका लिखा एक एक शब्द मोती है। उनके ज़्यादातर गीत ऐसे हैं जो दिलों में तो उतरने के साथ ही साथ झकझोर कर भी रख देते हैं।

यही कारण रहा जहां उनको मंच पर सुनने के लिए लोग घंटों प्रतीक्षा करते थे। वहाँ फिल्म दुनिया के राज कपूर, देव आनंद, लता मंगेशकर और एसडी बर्मन जैसे दिग्गज भी नीरज की प्रतिभा के कायल थे।

नीरज ने हमेशा अपनी शर्तों के साथ काम किया। अपने मन और काम से कभी समझौता नहीं किया। हालांकि उनकी सेहत बरसों खराब रही लेकिन अंत तक उनकी जीवंतता देखते ही बनती थी।

बता दें नीरज के नाम से मशहूर इन महान कवि-गीतकार का असली नाम गोपाल दास सक्सेना था। लेकिन डॉ हरिवंश राय 'बच्चन' जी से प्रभावित होकर नीरज ने अपने नाम के आगे से सक्सेना हटाकर, गोपाल दास 'नीरज' लिखना शुरू कर दिया। नीरज को अपनी किशोर अवस्था से ही बच्चन जी से बेहद लगाव था। इस कारण वह बच्चन जी से सदा प्रभावित रहे।

नीरज जी से मेरी व्यक्तिगत मुलाकातें तो आठ-दस ही हो पायी होंगी। लेकिन लाल किला कवि सम्मेलन से लेकर रेडियो-टीवी के स्टूडियो कार्यक्रमों मेँ भी उन्हें प्रत्यक्ष सुनने का सौभाग्य मुझे मिला। उनके अंतिम दिनों में उनसे फोन पर भी कई बार बातें हुईं। हम उन्हें अपनी लेखकों, पत्रकारों और कलाकारों की संस्था का 'आधारशिला' शिखर पुरस्कार देना चाहते थे। यह संयोग है कि हमारी संस्था 'आधारशिला' की स्थापना भी मैंने माननीय बच्चन जी के आशीर्वाद से, उनके संरक्षण में 1982 में की थी।

अप्रैल 2018 मेँ नीरज जी ने हमारे 'आधारशिला' सम्मान को अलीगढ़ से दिल्ली आकर लेने की अपनी स्वीकृति भी दे दी थी। लेकिन इसके बाद नीरज जी कुछ ज्यादा अस्वस्थ होते होते 19 जुलाई 2018 को चिरनिंद्रा में लीन हो गए।

जब बस में मिले बच्चन जी

हालांकि उनके साथ बातों की यादों का खजाना मेरे पास है। नीरज जी ने एक बार बताया था कि सन 1942 में एक कवि सम्मलेन में हिस्सा लेने के लिए बस से कुछ कवि बांदा जा रहे थे। उस समय नीरज की उम्र 17 बरस थी। जब गोपालदास बस में चढ़े तो उन्हें सीट नहीं मिल पायी। तब बच्चन जी ने उन्हें अपनी गोद में बैठा लिया। बच्चन जी की इस बात से ही नीरज काफी प्रभावित हो गए। तब गोपाल दास ने बच्चन जी से कहा कि आज आपने अपनी गोद में बैठाया है तो अब मुझे आशीर्वाद भी दे दीजिये कि आपकी तरह अच्छा लिख सकूँ और आपकी तरह मुझे भी लोकप्रियता मिले। बच्चन जी गोपाल दास की ये बातें सुन मुस्कुराकर बोले- तथास्तु।

बच्चन जी का आशीर्वाद नए नए कवि बने गोपाल दास को इतना फला कि देखते ही देखते उनकी उदास, निराश जिंदगी ही बदल गई। करीब दो तीन साल में ही नीरज ने इतनी कवितायेँ लिख दीं कि सन 1944 में उनका पहला काव्य संकलन 'संघर्ष' भी आ गया। जिसे नीरज ने बच्चन जी को ही समर्पित किया।

नीरज बताते थे- ''मैंने कविताएं लिखनी तो शुरू कर दीं थीं। लेकिन असल में कविता क्या होती है यह मुझे तब पता लगा जब मैंने बच्चन जी की 'निशा निमंत्रण' पढ़ी। उसी के बाद मेरी काव्य रचनाओं में नए रंग आये।''

कवि सम्मेलनों को लोकप्रियता दिलाने में नीरज का योगदान

नीरज ने जब सन 1940 के दशक की शुरुआत में ही कविता पढना शुरू किया तो तब बच्चन जी जैसे कवि अपनी 'मधुशाला' जैसी रचनाओं के कारण इतने प्रख्यात हो चुके थे कि उनको मंच से अपने समक्ष सुनने के लिए लोग बेताब रहते थे। कवि सम्मेलनों को लोकप्रियता का शिखर दिलाने में बच्चन जी और नीरज जी का नाम हमेशा लिया जाता है। यूं मंचीय कविताओं को लोकप्रियता दिलाने में गोपाल सिंह नेपाली का भी बड़ा योगदान है। लेकिन नेपाली जी का निधन 1963 में ही हो गया था। इसलिए आज की पीढ़ी के कम लोग ही उन्हें जानते हैं। यूं बच्चन जी 1935 में 'मधुशाला' लिखने के बाद ही लोकप्रियता के सोपान चढ़ते हुए, शिखर पर पहुँच गए थे। लेकिन बच्चन जी कवि सम्मेलनों को लोकप्रियता दिलाने का सर्वाधिक श्रेय नीरज और नेपाली को देते थे। जबकि नीरज जी ने यह श्रेय हमेशा बच्चन जी को दिया।

नीरज जी ने अपने जीवन में मुक्तक, गीतीकाएं, कवितायें तथा गीतों की एक से एक रचना और खूबसूरत शब्दों की बेमिसाल बानगी प्रस्तुत की। लेकिन उन्हें अपनी जिस कृति से सबसे पहले पूरे देश में अपार ख्याति मिली वह थी-'कारवाँ गुजर गया,गुबार देखते रहे।' यह

गीत नीरज ने 1954 में लिखा था। इस गीत को नीरज ने पहले कुछ कवि सम्मलेनों में प्रस्तुत किया तो 'धर्मयुग' सहित कुछ और पत्र पत्रिकाओं ने इस गीत को प्रकाशित कर इस पर चर्चा भी खूब की। जिससे नीरज एक दम काफी लोकप्रिय हो गए।

इस गीत की लोकप्रियता को तब तो और भी चार चाँद लग गए,जब यह गीत सन 1965 में फिल्म 'नयी उम्र की नयी फसल' में सबके सामने आया। संगीतकार रोशन की धुनों और मोहम्मद रफ़ी के सुरों में ढलकर यह गीत इतना मशहूर हुआ कि इसकी गूँज आज तक कायम है। इसके बाद नीरज मंच के साथ साथ सिनेमा की मायावी दुनिया में भी लोकप्रिय होने लगे।

'लिखे जो ख़त तुझे' ने किया कमाल

सन 1968 में 'कन्या दान' फिल्म में आया नीरज का एक गीत-'लिखे जो खत तुझे, वो तेरी याद में' इतना लोकप्रिय हुआ कि आज भी वह गीत कानों में रस घोलने के साथ दिल-ओ-दिमाग को भी एक सुकून देता है। इस गीत के बाद वह बंबई जाकर रहने लगे थे।

हालांकि मुंबई में नीरज का प्रवास और उनका फ़िल्मी दुनिया से एक गीतकार के रूप में नाता करीब 5 साल तक ही रहा। बाद में उनका मन फ़िल्मी दुनिया में नहीं रमा और सन् 1973 में वह वापस अलीगढ़ आ गए। लेकिन इन कुछ ही वर्षों में नीरज तब के लगभग तमाम गीतकारों के लिए बड़ी चुनौती बन गए। इस दौरान सर्वश्रेष्ठ गीतकार के रूप में लगातार तीन बरसों तक नीरज को फिल्मफेयर का नामांकन मिलता रहा। जिनमें 'काल का पहिया' (फिल्म चंदा और बिजली-1969) के लिए तो उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। जबकि 'बस यही अपराध हर बार करता हूँ' (पहचान-1970) और 'ए भाई ज़रा देखके चलो' (मेरा नाम जोकर-1971) के लिए भी वह फिल्म फेयर के लिए नामांकित रहे।

यूँ नीरज को देव आनंद की फिल्मों और आरडी बर्मन तथा शंकर जयकिशन की धुनों से सर्वाधिक लोकप्रियता मिली। जिन फिल्मों के लिए नीरज के गीत सदा सदा याद किये जायेंगे, उनमें 'प्रेम पुजारी' सबसे ऊपर है। जिसमें- रंगीला रे, फूलों के रंग से, शोखियों में घोला जाए, ताकत वतन की हम से है, हिंदी फिल्मों के बेमिसाल गीत हैं। साथ ही 'गैम्बलर' (दिल आज शायर है, कैसा है मेरे दिल तू खिलाड़ी,) 'शर्मीली' (खिलते हैं गुल यहाँ, मेघा छाये आधी रात, ओ मेरी शर्मिली) तथा 'तेरे मेरे सपने (जीवन की बगिया महकेगी,ए मैंने कसम ली) जैसी फिल्मों के गीत भी भारतीय सिनेमा के अमर गीतों की माला की एक अटूट कड़ी हैं।

प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, पीड़ा, जन्म और मृत्यु

नीरज ने प्रेम पर इतना कुछ लिखा है कि उनको एक बड़ा वर्ग प्रेम, सौन्दर्य यानी श्रृंगार रस का कवि ही ज्यादा मानता रहा है। लेकिन ध्यान से देखा जाए तो नीरज के काव्य में काव्य के लगभग सभी प्रमुख नव रस- श्रृंगार, करुण, वीर, हास्य, शांत,भयानक, रौद्र, अद्‌भुत और वीभत्स के साथ भक्ति और वात्सल्य रस भी देखने को मिलते हैं। यह बात अलग है कि प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, पीड़ा, जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म को लेकर उन्होंने बहुत कुछ लिखा है। जैसे 'हाँ बादल बिजली चन्दन पानी जैसा अपना प्यार, लेना होगा जन्म हमें कई कई बार, इतना मदिर इतना मधुर तेरा मेरा प्यार।'

उनकी दार्शनिकता भी उनके गीतों में कैसे झलकती है उसकी भी बहुत सी मिसाल हैं. जैसे-

'हूँ बहुत नादान करता हूँ ये नादानी,
बेचकर खुशियाँ खरीदूं आँख का पानी,
हाथ खाली हैं मगर व्यापार करता हूँ,
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हू।'

फिल्म गीतों से इतर अपनी अन्य काव्य रचनाओं में भी नीरज ने एक से एक रंग, एक से एक रस को लिया है। जहाँ उनकी दार्शनिकता के साथ समाज और राजनीति पर भी एक कवि की पैनी नज़र साफ़ झलकती है-

सिर्फ अधिकार की मांग है न लोकतंत्र
हमें कर्तव्य का भी ज्ञान होना चाहिए
आन्दोलन का अर्थ होता है नहीं विध्वंस
उनका मकसद है कि निर्माण होना चाहिए

ऐसे ही नीरज की एक और रचना के अंश हैं, जो उन्होंने तब रची थी. जब सन 1977 में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार ने राज घाट पर शपथ ली थी-

शपथ उठाई राजघाट पर
उसको भूल न जाना
वादे पूरे नहीं किये तो
होगा नहीं ठिकाना
भूल गए तो माफ़ करेगा
तुम्हें न कभी ज़माना

जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म पर नीरज की अनेक कृतियों में से कुछ ये बेहद ख़ास पंक्तियाँ देखिए—

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी
जैसे रात उतार चांदनी
पहने सुबह धूप की धोती
× × ×
कुछ सपनों के मर जाने से
जीवन नहीं मरा करता
कुछ पानी के बह जाने से
सावन नहीं मरा करता.

उनकी इसी दार्शनिकता पर ये पंक्तियाँ भी अहम हैं, जिनमें कुछ लोग हास्य रस भी देखते हैं-

तन से भारी सांस है, इसे समझ लो खूब
मुर्दा जल में तैरता, जिंदा जाता डूब
जिंदगी को जी भर जिया नीरज ने

गोपाल दास नीरज के पूरे जीवन पर नज़र डालें तो उन्होंने अपने जीवन को जी भर कर

जिया है। यूँ बचपन में उन्होंने कई तरह के दुःख, कई प्रकार की पीड़ाओं को देखा। उत्तर प्रदेश के पुरावली, इटावा में 4 जनवरी 1925 को जन्मे गोपाल के पिता बृजकिशोर का निधन तभी हो गया, जब वह मात्र 6 वर्ष के थे। नीरज को जिन बातों का दु:ख सबसे ज्यादा रहा उनमें एक यह थी कि पिता के निधन के बाद उनका बचपन नहीं रहा। फिर भी कई परेशानियों के बावजूद गोपाल दास ने अपनी हाई स्कूल की परीक्षा सन 1942 में एटा से प्रथम श्रेणी में पास करके अपनी योग्यता का परिचय सभी को दे दिया। उसके बाद उन्हें दिल्ली के आपूर्ति विभाग में टाइपिस्ट की नौकरी मिल गयी। उसके बाद उनकी आर्थिक समस्याएँ धीरे धीरे कम होने लगीं.इधर वह साथ साथ पढाई करते करते एमए भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर गए। उधर नौकरियां भी बदलते रहे। कभी दिल्ली, कभी कानपुर, कभी मेरठ तो कभी अलीगढ़। लेकिन बचपन से ही अधिक काम करने के चक्कर में नीरज का स्वास्थ्य कम उम्र में ही खराब होना शुरू हो गया। नीरज जी से जब मेरी उनके स्वास्थ्य पर बात होती थी तो वह कहते थे–'मेरी तबियत की चिंता क्या करनी। मैं तो बचपन से ही बीमार रहा हूँ। लेकिन देखा जाए तो मैं 90 की उम्र में भी औरों से बहुत स्वस्थ हूँ इसलिए मुझे उम्मीद है कि मैं पूरे सौ बरसों तक जीऊंगा'। लेकिन उनका यह सपना पूरा नहीं हो सका। जबकि उन्होंने अपने भरे पूरे परिवार का प्रेम पाया, अपने जीवन में अपना प्रपौत्र भी देखा. पद्मश्री, पद्मभूषण, यशभारती और फिल्मफेयर जैसे कई सम्मान भी पाए। एक कवि, एक गीतकार के रूप में नीरज ने जो अपनी अत्यंतत विशिष्ट पहचान बनाई वह अमिट है। तभी नीरज के लिए कहा भी जाता है- **कवि होना भाग्य है, नीरज होना सौभाग्य।** ❐

संपर्क- मोबाईल- 9555826269

ईमेल- pradeepsardana29@gmail.com

❐ नीरज के गीत

कहानी बनके जिये

कहानी बनके जिये हम तो इस ज़माने में
लगेंगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में

न जिनको पीना भी आए न पिलाना आए
शरीफ़ ऐसे भी आ बैठे हैं मैख़ाने में

ग़रीब क्यों न रहे देश की सारी बस्ती
हैं क़ैद खुशियाँ सभी एक ही घराने में

न आग फेंको मेरे मुस्कराते फूलों पर
मिलेगी ऐसी न खुशबू किसी ख़ज़ाने में

जो रोते दिल को हँसाने में इबादत होती
बड़ी है उससे इबादत कहाँ ज़माने में

गिरी हैं बिजलियाँ कुछ ऐसी चमन पर अपने
कि अब तो बच्चे भी डरते हैं मुस्कराने में

है उसके वास्ते पागल कली कली अब तक
कोई तो बात है नीरज के गुनगुनाने में।

आँसुओं का कारवां

गीत जब मर जाएंगे फिर क्या यहाँ रह जाएगा
इक सिसकता आँसुओं का कारवां रह जाएगा।

प्यार की धरती अगर बंदूक से बांटी गई
एक मुर्दा शहर अपने दरमियां रह जाएगा।

आग लेकर हाथ में पगले! जलाता है किसे
जब न ये बस्ती रहेगी तू कहां रह जाएगा।

गर चिराग़ों की हिफ़ाज़त फिर उन्हें सौंपी गई
रोशनी मर जाएगी, बाक़ी धुआं रह जाएगा।

आएगा अपना बुलावा जिस घड़ी उस पार से
मैं कहां रह जाऊंगा और तू कहां रह जाएगा।

सिर्फ धरती ही नहीं, हर शै यहाँ गर्दिश में है
जो जहाँ अब हैं, नहीं वो कल यहां रह जाएगा।

ज़िंदगी और मौत की केवल कहानी है यही
फुर्र उड़ जाएगी चिड़िया, आशियां रह जाएगा।

दर्द की बस्ती

कोई दरख़्त मिले या किसी का घर आए
मैं थक गया हूँ कहीं छाँव अब नज़र आए।

जिधर की सिम्त मेरे दोस्तों की बैठक थी,
उसी तरफ़ से मेरे सहन में पत्थर आए।

दिलों को तोड़ के मंदिर जो बनाकर लौटे
उन्हें बताओ कि वह क्या गुनाह कर आए।

न जाने फूल महकते हैं किस तरह के वहाँ
जो तेरी सिम्त गए, लौटकर न घर आए।

वो क़त्ल किसने किया है सभी को है मालूम
ये देखना है कि इल्ज़ाम किसके सर आए।

शराब ये तो सुबह को ही उतर जाएगी,
पिला वो मय कि नहीं होश उम्र भर आए।

बस एक बिरवा मेरे नाम का लगा देना
जो मेरी मौत की तुम तक कभी ख़बर आए।

वहीं पे ढूँढ़ना नीरज को तुम जहाँ वालो।
जहाँ भी दर्द की बस्ती कोई नज़र आए।

मज़हब

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।

जिसकी ख़ुशबू से महक जाए पड़ोसी का भी घर
फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाए।

आग बहती है यहां गंगा में ज़मज़म में भी
कोई बतलाए कहां जाके नहाया जाए।

प्यार का खून हुआ क्यों ये समझने के लिए
हर अंधेरे को उजाले में बुलाया जाए।

मेरे दुख-दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूं भूखा तो तुझसे भी न खाया जाए।

जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आंसू तेरी पलकों से उठाया जाए।

गीत उन्मन है, ग़ज़ल चुप है, रुबाई है दुखी
ऐसे माहौल में 'नीरज' को बुलाया जाए।

❐

दूरदर्शन की 'बुनियाद' का 'युग', 66 साल के सफर में 'हमलोग' कहाँ आ गए ?

▫ संजीव श्रीवास्तव

सन् 1959 से 2025 तक का सफर पूरा करने के बाद दूरदर्शन की पहुंच और ताकत आज भी बनी हुई है। हिंदी फिल्मों के तमाम दिग्गज डीडी के पर्दे को आजमा चुके हैं। श्याम बेनेगल, बीआर चोपड़ा, रामानंद सागर हों या अमिताभ बच्चन, केबीसी का पहला भाग भी डीडी पर ही प्रसारित हुआ था। दूरदर्शन के शानदार 66 साल पूरे होने पर कुछ सुनहरी यादें प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दूरदर्शन के 66 साल

भारत में दूरदर्शन सेवा के 66 साल पूरे हो गये। इसकी शुरुआत 15 सितंबर, सन् 1959 को हुई थी। दूरदर्शन इस मौके पर अपना स्थापना दिवस मना रहा है। लेकिन इस अवसर ने एक साथ ढेर सारी यादें ताजा कर दीं। नॉस्टेल्जिया केवल सिनेमा का नहीं होता, अपने टीवी के स्वर्णयुग की तासीर भी कम नहीं है। आज की तारीख में जब लोगों के स्मार्ट फोन और टैब में सूचना और मनोरंजन क्रांति के सारे माध्यम सिमट आये हैं, इसके बावजूद दूरदर्शन के उस युग में मनोहर कहानियों की यादों का अपना-सा गुलदस्ता है। स्मृतियों के रेटिना में बिना ऐन्टेना वे झरोखे झांकते हैं और अस्सी के दशक के दौर में ले जाते हैं। कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी, शरद जोशी और राही मासूम रज़ा जैसे लेखकों की पटकथाओं और संवादों ने दूरदर्शन को ऊँचाइयाँ दीं।

भारत में जब 66 साल पहले दूरदर्शन का जन्म हुआ तो वह भी *ठुमक चलत...* वाली अवस्था में ही था। वह प्रयोग का दौर था। तब वह आकाशवाणी का ही एक विभाग था लेकिन सन् 1976 में जब दूरदर्शन को आकाशवाणी से अलग किया गया तब कार्यक्रमों में विविधता आई। अंग्रेजी, हिंदी में समाचारों के अलावा आम जनता से जुड़े शिक्षाप्रद और मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण शुरु हुआ। तब हरेक समाचार वाचक घर-घर में एक स्टार की तरह जाने जाते थे। लेकिन 'रुकावट के लिए खेद है' भारतीय दूरदर्शन का अपना एक स्टेटस सिंबल रहा है, जिससे मुक्ति बहुत बाद में मिली। यह पब्लिक के बीच जुमले की तरह भी इस्तेमाल होता। कभी बिजली के जाने पर तो कभी ऐन्टेना पर कौवे के बैठ जाने पर।

टीवी, ऐन्टेना और बूस्टर का बॉक्स

डीटीएच के युग में ऐन्टेना को जेन जी (Gen Z) शायद भूल गई हो। वहीं जिन लोगों ने कोविड काल में 'बूस्टर' शब्द सुना है, उनके लिए यह नई जानकारी हो कि दूरदर्शन के अस्सी के दशक वाले दौर में इलेक्ट्रॉनिक शॉप से टीवी के साथ ही तीन और चीजें खरीदनी पड़ती थीं; एक ऐन्टेना, दूसरा-स्टेबलाइजर और तीसरा-बूस्टर। यह आमतौर पर एक छोटा-सा बॉक्स होता था। इसे पतले केबल के जरिये टीवी के कोड से कनेक्ट किया जाता था। आमतौर पर जिस क्षेत्र में प्रसारण सेवा धुंधली होती थी या बीच-बीच में रुक जाती थी। तो ऐसे में बूस्टर की मदद से प्रसारण को दुरुस्त किया जाता था। आड़ी-तिरछी कंपकंपाती तस्वीरें सीधी और साफ हो जाती थी और गर्ररररर वाला साउंड भी ठीक हो जाता था लेकिन टीवी स्क्रीन पर चिपकने वाली 'रुकावट के लिए खेद है' की प्लेट का कोई विकल्प नहीं था।

'रुकावट के लिए खेद है' अब मजा देता है

तब ये रुकावटें भले ही मजा किरकिरा कर देती थीं लेकिन आज उन रुकावटों की यादें मजा दोगुना कर देती हैं। एक-एक कर याद आते हैं. हमलोग, बुनियाद, मालगुडी डेज, मुजरिम हाजिर हो, मृगनयनी, मुंगेरी लाल के हसीन सपने, मैला आंचल, कक्काजी कहिन, युग, टीपू सुल्तान की तलवार, अलिफ लैला, मिर्जा गालिब, भारत-एक खोज, चंद्रकांता, चाणक्य, सर्कस, उड़ान, फौजी, व्योमकेश बख्शी, शक्तिमान, नुक्कड़, सिगमा, कब तक पुकारूं, नीम का पेड़, फिर वही तलाश, विक्रम बैताल, तेनाली रामन, वागले की दुनिया, ये जो है जिंदगी वगैरह। इन धारावाहिकों को पूरा परिवार एक साथ देखता था। अड़ोस-पड़ोस के वे लोग भी जुटते थे जिनके घर टीवी नहीं होता था। सच, सामूहिकता और पारिवारिकता का वह सुनहरा नज़ारा था। लेकिन जैसे ही 'रुकावट के लिए खेद है' की प्लेट चिपकती थी, घर में छततोड़ू ठहाके भी गूंजते थे।

दिलचस्प बात ये कि 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के जमाने में आते-आते जब हफ्ते तक भी कहानी एक कमरे से निकल कर दूसरे कमरे तक भी ठीक से नहीं पहुंचती, तब के सीरियलों में हर हफ्ते कहानी काफी आगे बढ़ जाती थी। दर्शक देखना चाहते थे कि पिछले हफ्ते के बाद इस हफ्ते कहानी में क्या मोड़ आने वाला है। कहानी और संवाद आम जनजीवन में गॉसिप का हिस्सा बनते थे। स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, पार्टी में बातचीत के प्रिय विषय होते थे। सभी अपनी-अपनी पसंद के सीन, संवाद, कहानी का जिक्र करते, आज तो संवाद ही खो गये हैं। उसकी जगह बैकग्राउंड म्यूजिक और क्लोज इमोशंस के बदले स्पेशल इफेक्ट्स ने ले लिये हैं।

चित्रहार, रंगोली और रविवार की फिल्में

हालाँकि तब भी दूरदर्शन पर सिनेमा से जुड़े कार्यक्रमों की अपनी सी लोकप्रियता थी। फिल्मी